कक्षा : पाँचवीं – जैन धर्म चन्द्रिका (परीक्षा 23 जुलाई, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) प्रमाद का प्रतिक्रमण कौनसे व्रत से होता है-
(क) सातवाँ व्रत (ख) पाँचवाँ व्रत
(ग) आठवाँ व्रत (घ) ग्यारहवाँ व्रत (ग)

(b) संभूम चक्रवर्ती ने कौनसा मद किया था-
(क) कुल मद (ख) बल मद
(ग) ऐश्वर्य मद (घ) लाभ मद (घ)

(c) साधु के निमित्त सामने लाकर आहारादि देवे तो कौनसा दोष लगता है-
(क) अभिहडे दोष (ख) अणिसिट्ठे दोष
(ग) परियट्टिए दोष (घ) पामिच्चे दोष (क)

(d) दूसरों को हानि पहुँचाने का मानसिक प्रयत्न करना क्या कहलाता है -
(क) संरंभ (ख) समारंभ
(ग) आरंभ (घ) तीनों ही (ख)

(e) निम्न में से 14 प्रकार के सिद्धों में से कौनसे सिद्ध नहीं है -
(क) पुरुष लिंग सिद्ध (ख) ऊर्ध्वलोक सिद्ध
(ग) स्वलिंग सिद्ध (घ) समलिंग सिद्ध (घ)

(f) आप तीनों लोक को प्रकाशित करने वाले अद्वितीय दीपक हो, यह भक्तामर की कौनसी गाथा के अर्थ में आया है-
(क) सोलहवीं (ख) चौदहवीं
(ग) दसवीं (घ) सातवीं (अ)

(g) निम्न में से कौनसा दोष मांडला के पाँच दोषों में से है-
(क) अपरिणय (ख) अपमाणं
(ग) अहाक्कम (घ) अज्झोयरए (ख)

(h) जय जिनवर, जय तीर्थंकर, जय चौबीसी भगवान इस चौबीसी के लेखक कौन हैं-
(क) केवलमुनि जी (ख) गौत्तममुनि जी
(ग) त्रिलोकऋषि जी (घ) माधवमुनि जी (क)

(i) कौनसे कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों के आबाधाकाल का नियम अलग है-
(क) वेदनीय कर्म (ख) अन्तराय कर्म
(ग) आयु कर्म (घ) मोहनीय कर्म (ग)

(j) भांड की तरह मुँह आदि से कुचेष्टा की हो, यह अर्थ कौनसे शब्द का है-
(क) कंदप्पे (ख) कुक्कुइए
(ग) कूडलेहकरणे (घ) कूडसक्खिज्जे (ख)

(k) चारित्र मोहनीय कर्मोदय की प्रबलता से होने वाली अभिलाषा को क्या कहते हैं-
(क) आसक्ति (ख) मूर्च्छा
(ग) संज्ञा (घ) निदान (ग)

(l) निम्न में से कौनसा प्रमाद नहीं है-
(क) मद्य (ख) विषय
(ग) विकार (घ) कषाय (ग)

(m) पूर्व महाविदेह के मध्य में कौनसी नदी आती है-
(क) सीतोदा नदी (ख) सीता नदी
(ग) गंगा नदी (घ) नर्मदा नदी (ख)

(n) भाषा समिति के चार भेदों में से द्रव्य से साधु को कौनसी भाषा बोलनी चाहिए-
(क) सावद्य भाषा (ख) निश्चयात्मक भाषा
(ग) निरवद्य भाषा (घ) मिश्र भाषा (ग)

(o) पोरिसि के प्रत्याख्यान में कितने प्रकार के आहार का त्याग किया जाता है-
(क) चार प्रकार (ख) तीन प्रकार
(ग) दो प्रकार (घ) तीनों ही (अ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) मिथ्या दर्शन शब्द सम्यग्दर्शन का घातक है। (नहीं)

(b) कष्ट होने पर शीघ्र मरने की इच्छा नहीं करना मरणासंसप्पओगे कहलाता है। (नहीं)

(c) झूसरा प्रमाण का अर्थ चार सौ हाथ सामने देखकर चलना है। (नहीं)

(d) आहारादि ग्रहण करते समय शुद्धि अशुद्धि का ध्यान रखना गवैषणा नहीं कहलाता है। (हाँ)

(e) सामान्य उपधि जो हमेशा पास रखी जावे, वह औधिक उपधि कहलाती है। (हाँ)

(f) कुवियप्पमाणाइक्कमे पाँचवें अणुव्रत का अतिचार है। (हाँ)

(g) आपके मुख मण्डल के सामने संसार के सब मुख मण्डल फीके हैं। (नहीं)

(h) एगासणा सूत्र के पाठ में लेवालेवेणं शब्द नहीं आता है। (हाँ)

(i) पृथ्वीकाय के मूल भेद 7 लाख है। (नहीं)

(j) तप्पडिरूवगववहारे का अर्थ वस्तु में भेल संभेल की हो, होता है। (हाँ)

(k) संस्तारक, औषध और भेषज ये वस्तुएँ अप्रतिहारी नहीं हैं। (हाँ)

(l) मनुष्य गति से आये हुए जीव में लोभ और परिग्रह संज्ञा अधिक होती है। (नहीं)

(m) छट्ठा व सातवाँ व्रत परिणाम व्रत कहलाता है। (हाँ)

(n) स्थंडिल भूमि दस प्रकार की होती है। (हाँ)

(o) अबोध बालक जल में पड़ी हुई चन्द्रमा की छाया को नहीं पकड़ना चाहता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	संरंभ	(क) इंगाले	यष्टि मुष्टि
(b)	औपग्रहिक	(ख) क्षमापना पाठ	पाट पाटलादि
(c)	मांडला	(ग) श्रुतवतां	इंगाले
(d)	संभीमं	(घ) पराघात	भयंकर
(e)	श्रुतमद	(च) यष्टि मुष्टि	स्थुलिभद्र
(f)	आयम्बिल	(छ) परिभोगैषणा	गिहिसंसट्ठेणं
(g)	कुंथुनाथ	(ज) गिहिसंसट्ठेणं	करूणासागर
(h)	अल्पश्रुतं	(झ) भयंकर	श्रुतवतां
(i)	उपघात	(य) प्रत्याख्यान	पराघात
(j)	सूरपन्नति	(र) व्रत भंग करना	बारह उपांग
(k)	आवश्यक	(ल) पाट पाटलादि	प्रत्याख्यान
(l)	कषाय	(व) अनुप्रेक्षा	क्षमापना पाठ
(m)	अनाचार	(क्ष) करूणासागर	व्रत भंग करना
(n)	एषणा समिति	(त्र) बारह उपांग	परिभोगैषणा
(o)	स्वाध्याय	(ज्ञ) स्थुलिभद्र	अनुप्रेक्षा

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(a) मेरा अर्थ रत्नों के करण्डक के समान हैं। रयणकरण्डगभूयं

(b) मैं एक ऐसा दोष हूँ जो वैद्य की तरह चिकित्सा करके आहारादि लेवे तो लगता हूँ। तिगिच्छे/चिकित्सा

(c) मेरे ऐसे 16 दोष है जो जीभ की लोलुपता वश साधु लगाते है। उत्पादना

(d) जीवन का अन्तिम समय जानकर कषाय एवं शरीर को कृश करने के लिये मुझे ग्रहण करते हैं। संलेखना/संथारा

(e) मैंने अशुभ योग का प्रतिक्रमण किया था। प्रसन्नचन्द्र राजर्षि

(f) मैं एक ऐसा क्रोध हूँ जिसका उदाहरण बालु (रेत) में खींची गई लकीर है। प्रत्याख्यानावरण क्रोध

(g) मन की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना मेरा कार्य है। मनोगुप्ति

(h) मेरा फल कड़वा, कठोर और अप्रिय होता है। पाप

(i) मैं प्रकाश का पाठ कहलाता हूँ। दर्शन समकित

(j) मैं एक ऐसा दोष हूँ जो गृहस्थ अपने और साधु के लिए शामिल आहार बनाकर देने पर लगता हूँ। मिसजाए/मिश्रजात

(k) मुझे उत्तराध्ययन सूत्र के 24 वें अध्ययन से लिया गया है। 5 समिति 3 गुप्ति का थोकड़ा

(l) सूत्रागम और अर्थागम ये दोनों मिलकर मुझे कहते हैं। तदुभयागम

(m) मैं आहारादि भोगते समय शुद्धि अशुद्धि का उपयोग रखना, कहलाता हूँ। परिभोगैषणा

(n) मुझे अच्छा स्वाद या गंध उत्पन्न करने के लिये संयोग मिलाना कहते हैं। संजोयणा

(o) मेरे पाठ में 18,24,120 प्रकार से मिच्छामि दुक्कडं दिया जाता है। 84 लाख जीवयोनि

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2=(16)**

(a) ज्ञान व ज्ञानी की सेवा के पाँच कारण में से प्रथम दो कारण लिखिए।

उ. 1. हमें नवीन ज्ञान की प्राप्ति होती है। 2. हमारे संदेह का निवारण होता है।

(b) सातवें अणुव्रत के पाँच अतिचार लिखिए।

उ. सचित्ताहारे, सचित्तपडिबद्धाहारे, अप्पउली ओसहि भक्खणया, दुप्पउलि ओसहि भक्खणया, तुच्छोसहि भक्खणया।

(c) पुव्विपच्छा संथवं का क्या अर्थ है ?

उ. पहले या पीछे दाता की प्रशंसा करके आहारादि लेवे तो पूर्व पश्चात् संस्तव दोष।

(d) मल्लिनाथ का.....चित्त में धरते। रिक्त स्थान पूर्ण कीजिए।

उ. मल्लिनाथ का कीर्तन करते, मुनिसुव्रत को वंदन करते,
नेमिनाथ प्रभु का नाम सुमरते, अरिष्टनेमि को चित्त में धरते।।

(e) आकुट्टि से मारना किसे कहते हैं ?

उ. कषायवश निर्दयतापूर्वक प्राणों से रहित करने, मारने की बुद्धि से मारना, आकुट्टि की बुद्धि से मारना कहलाता है।

(f) ओघ संज्ञा किसे कहते हैं ?

उ. मतिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से संसार के सुन्दर रुचिकर पदार्थों या लोकप्रचलित शब्दों के अनुरूप से जानने की अभिलाषा होना ओघ संज्ञा है।

(g) अतिचार किसे कहते हैं ?

उ. व्रत को भंग करने की सामग्री इकट्ठी करना, व्रत भंग के निकट पहुँच जाना अतिचार है।

(h) नात्यद्भुतं.....नात्मसमं करोति। रिक्त स्थान पूर्ण कीजिए।

उ. नात्यद्भुतं भुवनभूषण-भूतनाथ ! भूतैर्गुणैर्भवि भवंतमभिष्टुवंतः।
तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति।।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) भक्तामर की आठवीं गाथा का हिन्दी अर्थ लिखिए।

उ. जैसे कमलिनी के पत्तों पर रही हुई साधारण जल की बूँद भी मोती की शोभा को प्राप्त करती है, उसी प्रकार आपके प्रभाव से यह स्तोत्र भी सज्जन पुरुषों के चित्त को आकर्षित करेगा अर्थात् उत्कृष्ट काव्यों की श्रेणि में गिना जावेगा।

(b) आयम्बिल सूत्र के प्रत्याख्यान का पाठ लिखिए।

उ. उग्गए सूरे आयंबिलं पच्चक्खामि अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं लेवालेवेणं, गिहिसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, (पारिट्ठावणियागारेणं) महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

(c) अनर्थदण्ड़ किसे कहते हैं ?

उ. आत्मा को मलिन करके व्यर्थ कर्म-बंधन कराने वाली प्रवृत्तियाँ अनर्थदण्ड है। इनमें निष्प्रयोजन पाप होता है। अतः ये सारी क्रियाएँ जिनसे अपना या अपने कुटुम्ब का कोई भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होता हो, वह अनर्थदण्ड है।

(d) साधु किन 6 कारणों से आहार छोड़ता है ?

उ. 1. शूलादि रोग उत्पन्न होने पर। 2. देवता, मनुष्य, तिर्यंच संबंधी उपसर्ग उत्पन्न होने पर।
3. ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए। 4. प्राणियों की रक्षा के लिए।
5. तपस्या करने के लिए। 6. शरीर का त्याग करने के लिए।

(e) व्रत और प्रत्याख्यान में प्रथम तीन अन्तर लिखिए।

उ. 1. व्रत विधिरूप प्रतिज्ञा व्रत है, जैसे मैं सामायिक करता हूँ जबकि पच्चक्खाण निषेधरूप प्रतिज्ञा है जैसे-सावद्य योगों का त्याग करता हूँ।
2. व्रत मात्र चारित्र से ही होते हैं जबकि पच्चक्खाण चारित्र और तप दोनों में होते हैं।
3. व्रत करणयोग के साथ ग्रहण किये जाते हैं जबकि पच्चक्खाण करणयोग के साथ भी तथा इनके बिना भी ग्रहण किये जाते हैं।

(f) संकिय और मक्खिय दोनों को समझाइए।

उ. संकिय- गृहस्थ अथवा साधु को शंका हो जाने के बाद आहारादि लेवे तो शंकित दोष।
मक्खिय- सचित्त पानी से हाथ की रेखा, बाल भीगें हो, उसके हाथ से आहारादि लेवे तो म्रक्षित दोष।

(g) निदान शल्य किसे कहते हैं ?

उ. धर्माचरण के द्वारा सांसारिक फल की कामना करना, भोगों की लालसा रखना अर्थात् धर्मकरणी का फल भोगों के रूप में प्राप्त करने हेतु अपने जप-तप-संयम को दाव पर लगा देना 'निदान शल्य' कहलाता है।

(h) प्रतिक्रमण की कोई दो परिभाषाएँ लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई दो परिभाषा मान्य-
1. कृत पापों की आलोचना करना, निंदा करना।
2. व्रत प्रत्याख्यान आदि में लगे दोषों से निवृत होना।
3. अशुभ योग से निवृत होकर निशल्य भाव से शुभयोग में उत्तरोत्तर प्रवृत्त होना।
4. मिथ्यात्व, अविरत, प्रमाद, कषाय और अशुभ योग से आत्मा को हटाकर फिर से सम्यग्दर्शन, ज्ञान व चारित्र में लगाना प्रतिक्रमण है।
5. पाप क्षेत्र से अथवा पूर्व में ग्रहण किये गये व्रतों की मर्यादा के अतिक्रमण से वापस आत्मशुद्धि क्षेत्र में लौट आने को प्रतिक्रमण कहते हैं।